UGC Approved, Journal No. 49321
Impact Factor : 2.591

ISSN : 0976-6650

# शोध दृष्टि

## Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 9, No. 4.1

February, 2018

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 2.591 ISSN : 0976-6650

# Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 9, No. 4.1 Part-II February, 2018

*Editor in Chief*
**Prof. Abhijeet Singh**

*Editor*
**Prof. Vashistha Anoop**
**Department of Hindi**
**Banaras Hindu University**
**Varanasi**

**Dr. K.V. Ramana Murthy**
**Associate Professor of Commerce**
**and Vice Principal**
**Vijayanagar College of Commerce**
**Hyderabad**

*Published by*
**SRIJAN SAMITI PUBLICATION**
**Varanasi**

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 2.591
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 9, No. 4, February, 2018, Part-II ISSN : 0976-6650

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| ☛ | देश के आर्थिक विकास में राज्य सड़क परिवहन निगम की भूमिका<br>**डॉ0 अनन्त प्रकाश पाण्डेय** | 1-2 |
| ☛ | बृजक्षेत्र की धार्मिक लोक कला एवं उसके तीज त्यौहार<br>**डॉ0 ललित गोपाल पाराशर** | 3-7 |
| ☛ | मुगलकालीन धार्मिक नीति : दीन–ए–इलाही के संदर्भ में<br>**कृष्ण कुमार जून** | 8-10 |
| ☛ | मृच्छकटिकम् में वर्णित सामाजिक स्थिति<br>**लवली श्रीवास्तव** | 11-14 |
| ☛ | नकसलवाद : वैचारिक विमर्श<br>**प्रो. (डॉ.) अमर ज्योति सिंह, प्रो. (डॉ.) अमर बहादुर सिंह, डॉ. अमर नाथ सिंह** | 15-17 |
| ☛ | सिनेमा : अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम<br>**अमरेन्द्र कुमार आर्य** | 18-20 |
| ☛ | एक और द्रोणाचार्य की रंगमंचीयता<br>**डॉ0 महेन्द्र गुहा** | 21-24 |
| ☛ | महिलाओं में आंतरिक प्रवसन का समाजशास्त्रीय अध्ययन<br>**राहुल कुमार तिवारी** | 25-31 |
| ☛ | भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : हिन्दी आलोचना–उद्‌भव और विकास<br>**पम्मी राय** | 32-34 |
| ☛ | भारतीय समाज और मुक्तिबोध का काव्य संसार<br>**स्पन्दन सिंह** | 35-39 |
| ☛ | बीसवीं सदी के अन्तिम दशक के उपन्यासों में व्यंग्य का स्वरूप<br>**राम प्रकाश सिंह** | 40-42 |
| ☛ | जिज्ञासा योजना<br>**सुमन आर्यन** | 43-45 |
| ☛ | राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर आतंकवाद<br>**प्रो. (डॉ.) अमर ज्योति सिंह, प्रो. (डॉ.) अमर बहादुर सिंह, डॉ. अमर नाथ सिंह** | 46-48 |
| ☛ | युवा कथाकारों का स्त्री स्वर<br>**प्रिया भारतीया** | 49-52 |
| ☛ | ग्रामीण क्षेत्र में किशोरी बालिकाओं के सामाजिक एवं स्वास्थ्य समस्याओं का अध्ययन<br>**विमला कुमारी** | 53-54 |
| ☛ | मुख्य द्वार एवं वास्तुशास्त्र<br>**डॉ0 अम्बुज त्रिवेदी** | 55-58 |
| ☛ | फलितज्यौतिषशास्त्रस्य वैशिष्ट्यम्<br>**डॉ0 उपेन्द्रकुमारपाण्डेयः** | 59-60 |
| ☛ | भारतीय संस्कृति पर बौद्ध धर्म का योगदान : एक अध्ययन<br>**अनुरूद्ध कुमार सिंह** | 61-62 |

| | | |
|---|---|---|
| ☛ | उभयमतेप्रपंचकारणविमर्शः<br>**डॉ0 रवीन्द्र कुमार पाठक** | 63-66 |
| ☛ | ग्रहाधारितरोगविज्ञानम्<br>**अनिरुद्ध नारायण शुक्ल** | 67-68 |
| ☛ | धर्मशास्त्रेषु श्राद्धविमर्शः<br>**डॉ0 रणजीतः** | 69-70 |
| ☛ | राष्ट्रिय संस्कृतसंस्थानेन प्रायोजिता ई–अधिगम सम्बद्ध परियोजना<br>**प्रदीप कुमार पाण्डेय** | 71-76 |
| ☛ | दलित आत्मसम्मान व आत्मनिर्माण के शिल्पी : बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर<br>**सुभाष चन्द्र सिंह** | 77-78 |
| ☛ | ''झूठा सच'' में नारी संवेदना<br>**दुर्गेश मिश्र** | 79-80 |
| ☛ | भारत में त्वरित न्याय : एक समीक्षा<br>**सत्येन्द्र यादव** | 81-83 |
| ☛ | कविता के माध्यम से बहुत कुछ बचा ले जाने की कोशिश : राजेश जोशी की कविताएँ<br>**प्रियंका श्रीवास्तव** | 84-88 |
| ☛ | दंडनायक : वर्तमान भारत की चुनौतियाँ<br>**फरहत परविन** | 89-92 |
| ☛ | शिवपूजन सहाय का व्यक्तित्व : साहित्यिक सांस्कृतिक चिंतन के आयाम<br>**प्रमोद कुमार** | 93-94 |
| ☛ | অমিয়ভূষণ মজুমদারের উপন্যাসে জনজীবনে অস্তিত্বের সংকট<br>**জয়ন্ত মন্ডল** | 95-97 |
| ☛ | रामायण में नागवंश<br>**रणविजय सिंह** | 98-100 |
| ☛ | भारतीय नृत्य कला की उत्पत्ति एवं विकास<br>**यास्मीन सिंह** | 101-102 |
| ☛ | शिक्षा के अधिकार की आवश्यकता और सुधार<br>**हलीमा** | 103-105 |
| ☛ | मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीय भावना एवं उनकी प्रासंगिकता<br>**आरती कुमारी** | 106-108 |
| ☛ | झारखण्ड के बिरहोर जनजाति का सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विशेषताओं का अध्ययन<br>**डॉ० रोशन कुमार** | 109-112 |
| ☛ | भारत और भीमराव एक चिंतनपरक अध्ययन<br>**राजीव कुमार दास** | 113-116 |
| ☛ | स्त्री अस्मिता : एक अवलोकन<br>**डॉ० खुशबू अमन वर्मा** | 117-119 |

| | | |
|---|---|---|
| ☞ | अज्ञेय : एक विवेचन<br>**डॉ० रिंकु कुमारी** | 120-122 |
| ☞ | निराला की कविताओं में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना<br>**सरिता कुमारी** | 123-125 |
| ☞ | ब्राह्मण धर्म में देवी युग्म मूर्तियों की संकल्पना<br>**शिवेन्द्र कुमार पटेल** | 126-128 |
| ☞ | कबीर काव्य में सम्प्रेषण<br>**गोविन्द दास** | 129-130 |

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 2.591
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 9, No. 4.1, February, 2018 ISSN : 0976-6650

# भारतीय नृत्य कला की उत्पत्ति एवं विकास

**यास्मीन सिंह**
शोध छात्रा, कथक नृत्यांगना, रायगढ़ घराना

नृत्य की उत्पत्ति के विषय में कोई प्रामाणिक ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। नृत्य कला की उत्पत्ति सम्भवतः पूर्व पाषाण काल में हुई होगी या ऐसा भी कहा जाये कि नृत्य की उत्पत्ति मानव की उत्पत्ति के साथ–साथ ही हुई तो कोई अतिशयोक्ति न होगी क्योंकि नृत्य मनुष्य के जीवन की स्वाभाविक प्रक्रिया है।

आदिमानव ने प्रकृति के विभिन्न रूपों से डरकर उन्हें प्रसन्न करने हेतु कुछ उपाय सोचे। सर्दी, गर्मी, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, ज्वालामुखी, विस्फोट, ओले, पाला आदि को उसने अदृश्य असुरों का उत्पीड़न समझा। उन्हें प्रसन्न करने हेतु विभिन्न मंत्रों–तंत्रों, भाव–भंगिमाओं व हस्त मुद्राओं का आविष्कार हुआ और तभी से अग्नि, जल, वायु, सूर्य आदि प्रकृति के विविध रूपों की देवताओं के रूप में पूजा–अर्चना प्रारम्भ हुई। वेदों में अधिकांशतः इन्हीं की उपासना का वर्णन है। वैदिक मंत्रों का उच्चारण मुद्राओं के साथ ही किया जाता था। इस प्रकार मुद्राओं द्वारा नृत्य की उत्पत्ति हुई। वैदिक मतानुसार नृत्य शब्द की उत्पत्ति "नृ" धातु से हुई है। इसका उल्लेख वैदिक साहित्य में भी मिलता है।

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा (लगभग 3250 ई. पूर्व) की खुदाई में प्राप्त नृत्य करती हुई मूर्तियाँ नृत्य की प्राचीनता को सिद्ध करती हैं। प्राचीन द्रवीड़ संगीत ग्रन्थ "शिलप्पदिकारम" की नायिका माधवी निष्णात नृत्यांगना और संगीतज्ञा थी। ब्रम्हा ने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद से क्रमशः पाठ्य, अभिनय, गीत और रसों को संग्रहीत कर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्रदान करने वाले इस नाट्यशास्त्र की रचना की। नाट्यशास्त्र अर्थात् पंचम वेद में नृत्य की तकनीक व विभिन्न अंगों का बहुत सूक्ष्मता से वर्णन किया गया है। इसी कड़ी में आचार्य नन्दीकेश्वर अपने ग्रन्थ "अभिनय दर्पण" जो कि प्राचीन भारत का नृत्य पर आधारित ग्रन्थ है, उसमें भी नृत्य की उत्पत्ति एवं नृत्य में प्रयोग होने वाले आंगिक, वाच्चिक, आहार्य तथा सात्विक अभिनयों का विस्तृत रूप से वर्णन किया है।

हिन्दु पुराणों के अनुसार नृत्य का उदय आदिदेव भगवान शिव व आदि शक्ति माँ पार्वती द्वारा हुआ। प्रामाणिक रूप से यह भी उपलब्ध होता है कि भगवान शिव ने पुरूष प्रकृति के आधार पर ताण्डव व माँ पार्वती ने नारी प्रकृति के आधार पर लास्य नृत्य को जन्म दिया। रामायण और महाभारत ग्रन्थों में नृत्य की परम्परा देखने को मिलती है। इन महाकाव्य कालों में कथा वाचकों की संज्ञा शुरू हो गई थी। महाभारत में एक स्थान पर यह भी उल्लेख है कि अर्जुन ने मणिपुर के राजा को नृत्य की शिक्षा दी थी। महाभारत के "वन पर्व" में लिखा है कि– "अर्जुन ने विश्वावसु के पुत्र चित्रसेन से नृत्य की विधिवत् शिक्षा प्राप्त की थी।"

दूसरी शताब्दी ई.पू. से लेकर 19वीं शताब्दी ईस्वी तक विभिन्न शिल्पकारियों एवं साहित्य में नृत्य के अवशेष पाये जाते हैं। नृत्य के इतिहास को दो भागों में विभाजित किया गया है। पहला, दूसरी शताब्दी ई.पू. से लेकर 9वीं शताब्दी तक एवं 10वीं शताब्दी से लेकर 18वीं शताब्दी तक है। पहले काल में संस्कृत भाषा साहित्य को अधिक प्रभावित करती थी एवं दूसरे काल में अन्य क्षेत्रिय भाषा के विकसित होने से अन्य नृत्य शैलियाँ विकसित हुई।

पहली शताब्दी से लेकर 9वीं शताब्दी के बीच नाट्यशास्त्र का प्रभाव मूर्तिकलाओं में दिखाई देता है। इस काल में प्रस्तर कला में कई नट–नटियों की मूर्तियाँ मिलती हैं। सांची, मथुरा, अजन्ता, एलोरा, अमरावती, नागार्जनाकोण्डा, एलिफेन्टा, आदि स्थानों की प्राचीन मूर्तियों को देखने से विदित होता है कि पाषाण काल और धातु काल की आर्य जाति अपने कल्पित देवताओं को प्रसन्न करने के लिए मूर्तियों के आगे नृत्य किया करती थी। उस काल में जैसे नृत्य हुआ करते थे, वैसी ही मूर्तियाँ पुरातत्व विभाग में पाई जाती है। संस्कृत कवि कालिदास की रचनाओं में भी नृत्य का उल्लेख पाया जाता है। कालिदास के बाद कवि भवभूति एवं हर्ष के समय 8वीं शताब्दी में भी नृत्य का उल्लेख मिलता है। संस्कृत में लिखित "कर्पुरमंजरी" में भी नृत्यकला का उल्लेख प्राप्त होता है।

नाट्यशास्त्र में उल्लेखित "करण" तन्जौर के मन्दिरों की मूर्तियों में पाये जाते हैं। चन्देल राजाओं के द्वारा निर्मित मंदिर जैसे खजुराहो, भोरमदेव आदि मन्दिर में नृत्यशिल्प का अस्तित्व पाया जाता है।

महर्षि पाणिनी कृत अष्टाध्यायी, कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र, वात्स्यायन कृत कामसूत्र तथा जैन व बौद्ध ग्रन्थों में नृत्य की परम्परा देखने को मिलती है। बौद्ध मन्दिरों, में नृत्य एवं संगीत सम्बन्धी चित्रों को देखने से पता चलता है कि उस समय संगीत नृत्य का खूब अच्छा प्रचार था। बौद्ध भिक्षुओं ने देश व देश के बाहर भी बौद्ध धर्म का प्रचार नृत्य व संगीत के माध्यम से किया। बौद्ध काल में आम्रपाली नामक नर्तकी का उल्लेख मिलता है। मौर्यकाल में रूप, यौवन एवं कला सम्पन्न गणिका को राजनर्तकी के उच्च वेतन पर

नियुक्त किया जाता था। इस युग में गायक, वादक, नर्तक एवं चारणों को राजनैतिक रहस्यों की जानकारी लाने के लिए गुप्तचरों के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। गुप्तकाल में कला, साहित्य एवं संगीत में इस युग ने उन्नति की तमाम ऊँचाइयों को छू लिया था। मन्दिरों में संगीतोपासना के लिए नर्तक एवं नर्तकियों की नियुक्ति होती थी। सामाजिक पर्वों एवं उत्सवों पर संगीत एवं नृत्य का आयोजन एक आम बात थी। इस समय नृत्य एवं संगीत उन्नति के शिखर पर पहुँच चुका था। सूरदास, तुलसीदास और मीरा जैसे भक्त कवियों ने नृत्य पदों की रचना की।

मध्य युग में भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना के साथ ही वहाँ की संस्कृति का प्रभाव भारतीय संस्कृति और कलाओं पर पड़ना आरंभ हुआ। इस युग में संगीतज्ञों व नृत्यकारों ने मन्दिरों के स्थान पर राजदरबारों में आश्रय ग्रहण किया। यद्यपि मन्दिरों व अन्य धार्मिक स्थानों पर भी संगीत–नृत्य आराधना का क्रम चलता रहा, तथापि नृत्य को अधिकांशतः शहरी महलों से ही प्रोत्साहन मिलता रहा। कलाकारों ने कथा–अभिनय के माध्यम से कृष्ण लीलाओं का परम्परागत रूप कायम अवश्य रखा किन्तु उनके नृत्यों के नायक कृष्ण और नायिका राधा अपने मूल रूप में गाम्भीर्य को कायम नहीं रख सके। राजा–महाराजाओं, बादशाहों और नवाबों को प्रसन्न करने के लिए उनका स्तर श्रृंगारिक बना दिया गया, जिनके फलस्वरूप समस्त नृत्य की प्रकृति में बड़ा परिवर्तन आया।

19वीं शताब्दी के अन्तिम दशकों और 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का इतिहास अत्यंत दयनीय है। अवध की नवाबी के समाप्त होने पर तथा अंग्रेजों की जड़ें जम जाने पर नर्तकों का राज्याश्रय समाप्त हो गया तथा उनकी जीविका का साधन गणिकाओं को तालीम देना भर रह गया। मन्दिरों में सुशोभित होने वाली नृत्य कला अब गणिकाओं के कोठों पर निवास कर रही थी। विलासमय वातावरण में रहने के कारण इसमें निरन्तर परिवर्तन आता गया। अंग्रेजों की भारतीय कलाओं में विशेष रूचि नहीं थी, अतः इन्होंने नृत्य–शैली को भी किसी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं दिया। उस समय इस नृत्य तथा संगीत कला को पुनः अपने मूलरूप में प्रतिष्ठित करने हेतु अनेक महान विद्वानों ने अपना योगदान प्रदान किया। उनमें से कुछ नाम हैं– रविन्द्रनाथ टैगोर, मैडम मेनका, बेल्लाथोल, रूखमिनी देवी अरूण्डेले आदि।

आधुनिक काल में नृत्य एवं संगीत कला के प्रचार–प्रसार में सरकार का प्रशंसनीय सहयोग रहा है। स्थान–स्थान पर संगीत एवं नृत्य के केन्दों की स्थापना करना, नृत्य को महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में एक विषय के रूप में रखना, सांस्कृतिक दलों को देश–विदेश में कला प्रदर्शन हेतु भेजना इत्यादि उसके ठोस कदम हैं।

**सन्दर्भ :**

1. Vatsyayan Kapila, Indian Classical Dances, Publications Division, Year December 1974.
2. Kumar Amit, History of Dance, Cyber Tech Publications, New Delhi, First Published 2014.
3. Narayan Shovana, Kathak, A Shubhi Publications Enterprise, Gurgaon.
4. टाक डॉ. माया, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण (द्वितीय आवृत्ति): 2006.
5. खरे शिखा, कथकः सौन्दर्यात्मक शास्त्रीय नृत्य गहन अध्ययन एवं चिन्तन, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करणः 2005.
6. दाधीच डॉ. पुरू, पाश्चात्य नृत्यकला, बिन्दू प्रकाशन, इन्दौर (म.प्र.), प्रथम संस्करणः 2009.
7. गहरवार नीता, भारतीय संस्कृति में नृत्य, बी.आर.रिदम्स, दिल्ली, प्रथम संस्करणः 2015.
8. टाक प्रो. माया, संगीत वैदिक संगीत अंक, संगीत कार्यालय, हाथरस, (उ.प्र.), वर्षः 73/अंक 1, जनवरी 2007.
9. Chaturvedi Nirupama, Encyclopaedia of Indian Dances, Anmol Publication PVT. LTD., New Delhi, First Published 2007.
10. दवे डॉ. श्रीमती प्रेम, कथक नृत्य परम्परा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करणः 2004.
11. गुप्ता भारती, कथक और आध्यात्म, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करणः 2001.
12. Narayan Shovana, Indian Classical Dances, Shubhi Publications, Gurgaon, First Edition 2005.
13. गर्ग डॉ. लक्ष्मी नारायण, कथक नृत्य, संगीत कार्यालय हाथरस (उ.प्र.), आठवा संस्करण : मार्च 2010.
14. शर्मा डॉ. पंकजमाला, संगीत वैदिक संगीत अंक, संगीत कार्यालय, हाथरस, (उ.प्र.), वर्षः 73/अंक 1, जनवरी 2007.
15. मोहम्मद प्रो. शरीफ, भारत के लोकनृत्य, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, संस्करणः द्वितीय (आवृत्ति) 2010.
16. गर्ग लक्ष्मीनारायण, भारत के लोकनृत्य, संगीत कार्यालय हाथरस (उ.प्र.), तृतीय संस्करण, जून 2014.
17. गैरोला वाचस्पति, भारतीय नाट्य परम्परा और अभिनयदर्पण, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, संस्करणः 2013.